नए दौर में नया भारत छोड़ो संकल्प

समय गुजरने के साथ अतीत में घटित बड़ी-बड़ी घटनाएं भी अपना महत्व खोने लगती हैं। जो घटनाएं कभी बेहद अहम मानी जाती थीं, उन्हें आज के नजरिए से गौण समझा जाने लगता है। जिन घटनाओं ने कभी व्यापक पैमाने पर लोगों को आकर्षित किया था, वो अब ज्यादातर इतिहासकारों और स्कॉलर्स को ही लुभाती लगती हैं। भारत एक प्राचीन देश है, लिहाजा इसका इतिहास भी काफी समृद्ध है। हम एक ऐसा देश भी हैं, जो तेजी से आधुनिक बन रहा है। जब देश आधुनिक बनता है, तो वह अपनी पुरानी खूबियों को भूलने लगता है और इनके प्रति उसकी यादें भी धुंधलाने लगती हैं। पर कोई भी देश ऐसी अहम घटनाओं को भूलना गवारा नहीं कर सकता, जो उसके इतिहास में मील का पत्थर साबित हुई हों। अपने इतिहास को भुलाना अपनी पहचान को भुलाना, अपने अतीत से कट जाना और साथ ही साथ अपने भविष्य के प्रति बेपरवाह होने जैसा है।

आधुनिक भारत भी आज ऐसी भूलने व याद करने की कश्मकश से जूझ रहा है। जो घटनाएं वाकई याद करने लायक हैं, उन्हें याद करने का एक उपयुक्त तरीका यह है कि अतीत के अहम पड़ावों में नए समकालीन मायने तलाशे जाएं। जब हम अतीत की अहम घटनाओं के समकालीन सबक की ओर ध्यान नहीं दे पाते, तो या तो हम उन्हें भूल जाते हैं या फिर महज रस्मी तौर पर उनकी सालगिरह आदि मनाते हैं।

क्या ऐसा ही कुछ भारत छोड़ो आंदोलन के साथ भी है, जिसकी देश ने 9 अगस्त को 75वीं वर्षगांठ मनाई ? वर्ष 1942 में महात्मा गांधी के आह्वान पर बंबई से शुरू हुआ यह आंदोलन भारत के स्वाधीनता संग्राम के तहत आखिरी महाआंदोलन था। इसके तहत देशभर में लाखों देशभक्तों ने अपनी गिरफ्तारियां दी थीं। तब गांधीजी के %करो या मरो के नारे ने देशवासियों को आंदोलित कर दिया था और वे किसी भी कीमत पर विदेशी ताकत से देश को आजाद कराने के इस महायज्ञ में कूद पड़े। इसके चलते पांच साल में ही अंग्रेज भारत छोड़ने को विवश हो गए थे।

हमारे देश के स्वाधीनता संग्राम में भारत छोड़ो आंदोलन की खास अहमियत है। जैसे 1857 को पहले स्वाधीनता समर की राष्ट्रव्यापी शुरुआत के रूप में याद किया जाता है, वैसे ही 1942 इसका अंतिम और विजयी युद्ध आह्वान था। पर अफसोस कि भारत सरकार व भारतीय समाज 9 अगस्त 1942 की 75वीं वर्षगांठ के इस ऐतिहासिक क्षण को भी रस्मी स्मृति आयोजनों से परे राष्ट्रव्यापी परिचर्चा व कीर्तिगान का उचित अवसर बनाते नजर नहीं आते। यह निराशाजनक है क्योंकि इस साल देश अपनी आजादी की 70वीं सालगिरह भी मनाने जा रहा है। आखिर क्यों भारत छोड़ो आंदोलन के इस %अमृत महोत्सव को पर्याप्त तवज्जो नहीं मिल पा रही है? इसके कुछ फौरी राजनीतिक कारण हैं। पहला, सत्ताधारी भाजपा भले ही इसे खुलकर न कहे, लेकिन वह भारत छोड़ो आंदोलन को कांग्रेस की विरासत की तरह देखती है। आखिर, भारत छोड़ो आंदोलन का प्रस्ताव 8 अगस्त 1942 को बंबई के गोवलिया टैंक मैदान (जिसे बाद में अगस्त क्रांति मैदान के नाम से जाना गया) में आयोजित अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक में ही पारित किया गया था। अंग्रेजों द्वारा गिरफ्तार किए गए तमाम नेता व कार्यकर्ता कांग्रेस के सदस्य थे।

नहीं यकीन कि पैरों तले नहीं जमीन

कांग्रेस पार्टी में सब कुछ नेहरू-गांधी परिवार के इर्द-गिर्द ही घूमता है। पार्टी को दिशा भी वहीं से मिलती है और दिशाहीनता का शिकार भी वहीं से होती है। पिछले कुछ सालों से पार्टी का दिशा सूचक यंत्र खराब हो गया है। उसके ठीक होने के कोई आसार भी नजर नहीं आ रहे। आलम यह है कि देश की कभी सबसे बड़ी और सत्ता की स्वाभाविक पार्टी रही कांग्रेस केंद्र के बाद राज्यों से भी सत्ता से बाहर हो रही है और विपक्ष की भूमिका निभाने की न तो उसे आदत पड़ सकी है और न ही क्षमता दिखती है। बीमारी कितनी ही गंभीर क्यों न हो, उसके इलाज की कोशिश तो की ही जा सकती है। कांग्रेस नेता और कुछ समय पहले तक राहुल गांधी के सलाहकार माने जाने वाले जयराम रमेश ने पार्टी की बीमारी की ओर संकेत किया है। उन्होंने कहा है कि %सल्तनत चली गई, पर लोग अपने को अब भी सुल्तान समझ रहे हैं।

उनका यह कथन कांग्रेस की समस्या और उसके सुधार के आसार न दिखने की उनके जैसे नेताओं की अकुलाहट को व्यक्त करता है, पर जयराम की इस टिप्पणी पर कांग्रेसियों की प्रतिक्रिया इस बात का प्रमाण है कि कांग्रेस में कोई सच का सामना करने को तैयार नहीं। सच का सामना कराने के लिए गांधी परिवार को कठघरे में खड़ा करना पड़ेगा। कांग्रेस में गांधी परिवार से सवाल करना भी कुफ्र से कम नहीं है। जयराम रमेश ने कहा कि कांग्रेस जिस हालत में है, उसके बूते वह 2019 में नरेंद्र मोदी-अमित शाह की जोड़ी और भाजपा से लड़ने की स्थिति में नहीं है। ऐसा कहने वाले वे पहले व्यक्ति नहीं। यूपी विधानसभा चुनाव के नतीजों के बाद जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला भी कह चुके हैं कि विपक्ष को 2019 का चुनाव भूल जाना चाहिए और 2024 की तैयारी करना चाहिए। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार कांग्रेस के साथ रहते और साथ छोड़ने के बाद इसी आशय की बात कह चुके हैं।

जयराम रमेश की टिप्पणी पर दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने कहा कि वह भी तो सुल्तान रह चुके हैं। शीला दीक्षित शायद भूल रही हैं कि कांग्रेस में गांधी परिवार से इतर कोई नेता सुल्तान बनना तो दूर, बनने की सोच भी नहीं सकता। जाहिर है, जयराम रमेश की यह टिप्पणी बिना नाम लिए पार्टी के शीर्ष नेतृत्व के बारे में ही है। यह टिप्पणी राहुल गांधी की कार्यशैली पर सवाल उठा रही है। किसी को कोई गलतफहमी न रहे, इसलिए उन्होंने अपनी बात को और स्पष्ट किया। जयराम का कहना है कि 1977, 1989 और 1998-99 का संकट चुनावी हार का था, इसलिए पार्टी उससे उबरने में कामयाब रही। 2014 के लोकसभा चुनाव की हार और उसके बाद राज्य विधानसभा चुनावों में हार ने कांग्रेस के सामने अस्तित्व का संकट खड़ा कर दिया है। मुश्किल यह है कि कांग्रेस के लोग इसे समझने को तैयार नहीं। 1977, 1989 और 1998-99 की हार से कांग्रेस को उबारने के लिए पार्टी के पास नेतृत्व था। आज अस्तित्व का संकट मुंह बाए खड़ा है तो उसका एक बड़ा कारण नेतृत्व का संकट है। कांग्रेस के लोग यह समझने को ही तैयार नहीं कि जिन्हें (राहुल गांधी) वह अपनी सबसे बड़ी ताकत समझ रहे थे, वह सबसे बड़ी जिम्मेदारी साबित हो रहे हैं। पार्टी अतीतजीवी बन गई है। किसी कांग्रेसी से आज के संकट के बारे में पूछिए तो उसका रटा-रटाया जवाब होता है कि पहले भी तो संकट आया था और उबर गए। इस बार ऐसी क्या नई बात है? मशहूर कवि दुष्यंत कुमार की एक गजल का शेर है - %तुम्हारे पांव के नीचे कोई जमीन नहीं, कमाल ये है कि फिर भी तुम्हें यकीन नहीं। कांग्रेस और कांग्रेसियों की हालत कुछ ऐसी ही है। वे आईना दिखाने पर आईने में ही नुक्स निकाल रहे हैं।

पार्टी यह देखने को ही तैयार नहीं है कि उसका नेता भविष्य की ओर पीठ करके खड़ा है। कांग्रेस की हालत का अंदाजा इस बात से लगाइए कि लोकसभा चुनाव के बाद पार्टी ने अपने वरिष्ठ नेता एके एंटनी की अध्यक्षता में एक कमेटी बनाई। इसे चुनाव में हार के कारणों की समीक्षा का जिम्मा सौंपा गया। उस कमेटी की रिपोर्ट पर अमल तो छोड़िए, कांग्रेस कार्यसमिति के लोगों को उसके दर्शन भी नहीं हुए। पिछले तीन सालों में देश में इतना कुछ बदल गया, पर कांग्रेस संगठन में कोई बदलाव नहीं हुआ। हां, इतना जरूर हुआ है कि लोकसभा चुनाव के बाद से सोनिया गांधी की रोजमर्रा के कामों में सक्रियता दिनोंदिन घटती गई। एक-एक करके कई राज्यों के कांग्रेसी नेता राहुल गांधी की शिकायत करते हुए पार्टी से चले गए, पर राहुल गांधी के रवैये में कोई बदलाव नहीं आया। गुजरात जैसे राज्य में राज्यसभा की एक सीट जीतने के लिए पार्टी को जितनी मेहनत करना पड़ी, उतनी तो शायद उसने उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनाव में भी नहीं की होगी। 57 विधायकों वाली कांग्रेस गांधी परिवार के बाद पार्टी के सबसे ताकतवर माने जाने वाले नेता अहमद पटेल को अपनी पार्टी के सिर्फ 41 विधायकों का समर्थन दिला सकी। बाहर से मिला तीन विधायकों का समर्थन भी उन्हें न जिता पाता, अगर कांग्रेस के दो बागी विधायकों ने अति उत्साह में अपना बैलेट पेपर भाजपा नेताओं को न दिखाया होता। इन दो रद्द हुए वोटों ने अहमद पटेल की इज्जत बचा ली। अगला मोर्चा विधायकों के बीच नहीं, बल्कि जनता जनार्दन के बीच होगा। टूटी-फूटी गुजरात कांग्रेस संगठित भाजपा से कितना लड़ पाएगी, यह अगले तीन-चार महीनों में पता चल जाएगा।

लोकसभा चुनाव और उसके बाद हुए विधानसभा चुनावों में कांग्रेस की हार का एक बड़ा कारण संप्रग सरकार के दस साल का भ्रष्टाचार रहा है, लेकिन कमाल यह है कि पार्टी को यह सीधी-सी बात समझ में नहीं आ रही है कि देश का मतदाता भ्रष्टाचार को और बर्दाश्त करने या उसकी उपेक्षा करने को तैयार नहीं। कम से कम पार्टियों व सरकारों के संदर्भ में तो यह बात कह ही सकते हैं। व्यक्तियों के भ्रष्टाचार के प्रति अभी वह इतना निर्मम नहीं हुआ है। भ्रष्टाचार के मुद्दे पर मतदाताओं की ओर से नकारी गई कांग्रेस पिछले तीन साल में भ्रष्टाचार और भ्रष्टाचारियों के साथ और शिद्दत के साथ खड़ी नजर आ रही है। उसे उत्तर प्रदेश में अखिलेश यादव और सपा के भ्रष्टाचार से कोई परहेज नहीं तो पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस और बिहार में लालू परिवार के भ्रष्टाचार में उसे धर्मनिरपेक्षता को बचाने का अवसर नजर आता है। इन तीनों राजनीतिक दलों व कांग्रेस में एक और समानता है। ये सब व्यक्ति और परिवार आधारित पार्टियां हैं। कांग्रेस यह समझने से बच रही कि वह भ्रष्टाचार के आरोपों में घिरे नेताओं/पार्टियों से गठजोड़ करके मोदी और भाजपा से लड़ना चाहती है। इस लड़ाई का नतीजा बताने के लिए ज्योतिष के ज्ञान की जरूरत नहीं है।

राइट टु द रुट्स, आईनोक्स सीनेमा में स्क्रिनींग

गांधीनगर, प्रति वर्ष देश के सबसे बड़े संगीत समारोह में बजाने से से लेकर शेरी में मनाए जाने वाले गणपति उत्सवमें अपना आल्बम लोन्च करने और स्टेडियम में सो सोल्ड आउट हो गया हो ऐसे प्रथम इन्डिपेन्डेट इन्डियन म्युजिशियन बनने तक न्युक्लीयानी सफर के परिणामस्वरुप आज सैकड़ो और हजारों समर्पित फैन्स इस काफी निकटता से फोलो करते है। अहमदाबाद के युवा प्रोड्युसर उदयन सागर को आज समग्र देश में व्यापक रुप से प्रसिद्ध संगीतमय नाम न्युक्लीया बनाने का संघर्ष और समर्पण के वर्षो के बारे में काफी कम लोगों को जानकारी है। राइट टू द रुट्स नामक इस नई डोक्युमेन्ट्री इस यादगार प्रवास का चित्रण करती है। यह डोक्युमेन्टरी को आज गांधीनगर के आईनोक्स सिनेमा में प्रदर्शित किया गया। इस प्रकार की देश की सर्वप्रथम इलेक्ट्रोनिक इन्डिपेन्डेन्ट म्युजिक डोक्युमेन्ट्री राइड टू द रुट्स डोल्बी एडमोस साउन्ड है। (22-1)

स्वास्थ्य के लिए बटर का हेल्दी विकल्प टेबल स्प्रेड

अर्बन इंडिया में जटिल समस्या देखने मिल रही हैं। शोर्ट डेडलाइन, लंबी अवधि की फ्लाइट, लेट नाइट्स, अर्ली मार्निंग , बारबार बाहर खाना, शायद ही लिया जाता बेलेन्स डायट का जीवन शैली स्वास्थ्य पर खराब प्रभाव पड़ता है। अधिकांश लोग स्वास्थ्यवर्द्धक भोजन एवं एक्सरसाइज के सामने वक्त की कमी का अहोभाव व्यक्त करते है।

नेशनल फेमिली हेल्थ सर्वे के बताये अनुसार भारत में गत दस दशक से स्थुल लोगों की संख्या दोगुनी हो गई है। बड़ी संख्या में लोग हाई बोडी मास इन्डेक्स धारी हैं । जिससे हार्ट संबंधित समस्या, हाई बीपी, टाइप 2 डायाबीटिस एवं अनेक प्रकार के केन्सर होने की संभावनाएं बढ़ जाती है। कार्डियोलोजिस्ट की एप्वोइन्टमेंट में 40 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुयी है जिसमें से अधिकतर 25 से 35 वर्ष के आयु समूह के लोग होते हैं।

शेफ प्रणव जोशी कहते हैं कि भोजन में थोड़ा - बहुत बदलाव करके आपके भोजन को हेल्दी बनाया जा सकता हैं जैसे कि बटर के बदले स्वास्थ्यवर्धक टेबल स्प्रेड का उपयोग किया जा सकता हैं जो अच्छा विकल्प है। टेबल स्प्रेड में 0 प्रतिशत कोलेस्टेरोल होता है सेच्युरेटेड फेट और ट्रांस फेट जीरो होता है, लेकिन होता है हेल्दी फेट वह भी भारी मात्रा में जो बेड कोलेस्टेरोल लो डेन्सीटी लिपोप्रोटिन कम करता है और हाई डेन्सीटी लिपोप्रोटिन अच्छा कोलेस्टोरोल बढ़ाता है।-

ओडी ने अबीटेबल ऑफर पेश की

अहमदाबाद। जर्मन लक्जरी का उत्पादक कंपनी ओडी ने अपनी बेस्ट सेलिंग कार्स ओडी ए-3, ओडी क्यु3 और ओडी ए4 में अनबीटेबल ऑफर पेश की है। उच्च आकर्षक ऑफर मात्र रु. 24,999 के मासिक किश्त के ईएमआई शामिल है। इसके अलावा प्रथम वर्ष के लिए कोम्पलीमेन्टरी इन्श्योरेन्स, तीन वर्ष की सर्विस प्लान और दो वर्ष की एक्स्टेन्डेड वोरन्टी भी शामिल है। यह ऑफर को मात्र 7.99 प्रतिशत ही व्याजदर के साथ आकर्षक लोन और रु. एक लाख के एक्स्पेन्ज बोनस शामिल है।

ओडी इन्डिया के अध्यक्ष श्री राहिल अन्सारी ने बताया कि आपकी ओडी को अनबीटेबल ऑफर में प्राप्त करने का श्रेष्ठ समय है। हम भारत में ओडी के दस वर्ष पूरे होने का उत्सव मना रहे है और ओडी के सभी प्रसंशको को अनबीटेबल ऑफर में शामिल होने का आमंत्रण दे रहे है।

श्री अंसारी ने कहा कि, विशेष में सूचित वृद्धि को लक्ष्य में रखते हुए ओडी परिवार में शामिल होने के लिए यह योग्य समय है। इसके द्वारा ओडी क्लब इन्डिया के लाभ प्राप्त कर सकता है। हमें विश्वास है कि ओडी के प्रशंसक इस ऑफर का लाभ लेंगे। (22-1)

वनप्लस ने पेश किया वनप्लस 5 सॉफ्ट गोल्ड लिमिटेड एडिषन

नई दिल्ली, पिछले वर्श वनप्लस 3/3टी सॉफ्ट गोल्ड को मिली षानदार प्रतिक्रियाओं के बाद वनप्लस ने लिमिटेड एडिषन सॉफ्ट गोल्ड वनप्लस 5 की पेषकष करने का फैसला किया है। सैंडब्लास्टिंग प्रोसेस की मदद से विकसित सॉफ्ट गोल्ड वनप्लस 5 की फिनिष पिछली वनप्लस सॉफ्ट गोल्ड डिवाइसेज़ के मुकाबले 30 फीसदी बेहतर है।

नई पेषकष के बारे में विकास अग्रवाल, महाप्रबंधक, वनप्लस इंडिया ने कहा, ''सबसे खूबसूरती से डिजाइन किए गए स्मार्टफोन का निर्माता होने के नाते हमें इस त्योहारी सीज़न में बेहतर फिनिष और षानदार सॉफ्ट गोल्ड फिनिष के साथ नया वनप्लस 5 की पेषकष करते हुए बेहद खुषी हो रही है। नवीनतम वनप्लस 5 सॉफ्ट गोल्ड उन लोगों को लुभाएगा जो खूबसूरत डिजाइन और षक्तिषाली खूबियों के बीच संतुलन चाहते हैं।''

सॉफ्ट गोल्ड की कोटिंग तैयार करने में औसतन 180 दिन लगते हैं। उचित और हल्के रंग एक डायमंड कटर के माध्यम से प्रीमियम एल्युमिनियम एलॉय से मिलते हैं। उसके बाद सतह की सैंडब्लास्टिंग की जाती है और बहुत ही बारीकी से उसे पॉलिष किया जाता है। इस प्रक्रिया में हर सेकेंड मायने रखती है या फिर एनोडाइज्ड रंग एक अलग षेड ले लेते हैं। यह एक गहन प्रक्रिया है लेकिन इसके परिणाम बहुत ही षानदार होते हैं-एक बेहतरीन मैट फिनिष, देखने में खूबसूरत और बेहतरीन अहसास। (7-4)

होम क्रेडिट इंडिया ने ऋणों का पुनर्भुगतान आसान बनाने को पेटीएम से गठबंधन किया

गुड़गांव, भारत की सबसे तेज़ी से बढ़ती गैर बैंकिंग फाइनेंस कंपनियों (एनबीएफसी) में से एक होम क्रेडिट इंडिया फाइनेंस प्राइवेट लिमिटेड ने अपने ग्राहकों को उनकी ईएमआई का आसान और सुविधाजनक ढंग से भुगतान की सुविधा देने के लिए देश के सबसे बड़े मोबाइल भुगतान एवं ईकॉमर्स प्लेटफॉर्म पेटीएम के साथ गठबंधन किया है। निर्बाध रूप से डिजिटल भुगतान समाधानों को बढ़ावा देने की होम क्रेडिट इंडिया की योजनाओं और सरकार के डिजिटल इंडिया कार्यक्रम में भागीदार बनने की तर्ज पर पेटीएम के साथ यह गठबंधन किया गया है।

इस साझीदारी के तहत होम क्रेडिट इंडिया के ग्राहक अब या तो होम क्रेडिट इंडिया की वेबसाइट की पे ई एमआई लिंक पर क्लिक करके या फिर पेटीएम प्लेटफॉर्म पर लॉग इन करके सुरक्षित ढंग से अपने ऋण की किस्तों का भुगतान कर सकते हैं। होम क्रेडिट इंडिया की वेबसाइट पर ही पेटीएम के गेटवे के ज़रिये भुगतान की सुविधा के लिए ग्राहक को भुगतान की जाने वाली राशि एवं ऋण अनुबंध आईडी के साथ निजी विवरण डालना होगा। भुगतान डेबिट कार्ड, पेटीएम वॉलेट और नेट बैंकिंग के जरिये स्वीकार किया जाता है।

इस साझीदारी पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए होम क्रेडिट इंडिया फाइनेंस के मुख्य परिचालन अधिकारी मिलन उरबसेक ने कहा, श्अनूठे और नकदीरहित भुगतान के समाधान उभरने के साथ ही भारत में भुगतान का परिदृश्य तेज़ी से बदल रहा है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी में नित नए विकास से भारत डिजिटल भुगतान क्रांति की दहलीज पर है। पेटीएम के साथ गठबंधन इसी दिशा में एक कदम है। (19-8)

गोडैडी एक कस्टमर सेलीब्रेशन प्रोग्राम के साथ पांचवीं वर्षगांठ का मना रहा है जश्न

छोटे, आत्मनिर्भर उद्योगों को समर्पित दुनिया के सबसे बड़े क्लाउड प्लेटफॉर्म गोडैडी ने आज भारत में अपनी पांचवीं सालगिरह के जश्न की घोषणा की है। इस अवसर पर ग्राहकों के लिये विशेष पेशकश की गई है। साथ ही भारत में गोडैडी के सफल विकास में प्रमुख भूमिका निभाने के लिये उन्हें सम्मानित भी किया जा रहा है। भारत में गोडैडी का परिचालन वर्ष 2012 में शुरू हुआ था। स्थापना से लेकर अब तक गोडैडी ने भारत में 750,000' से अधिक छोटे व्यावसायों को अपने उपक्रम का ऑनलाइन निर्माण एवं विकास करने में मदद की है।

अपनी पांचवीं वर्षगांठ का जश्न मनाने के लिये गोडैडी ने एक कस्टमर गिव-बैक प्रोग्राम की घोषणा की है। इसमें गोडैडी द्वारा ग्राहकों को उनके प्रोडक्ट रिन्युअल पर 40 प्रतिशत तक की छूट दी जा रही है। ग्राहक 31 अगस्त 2017 तक इसका लाभ उठा सकते हैं। गोडैडी द्वारा एक नये कस्टमर एंगेजमेंट प्रोग्राम को भी शुरू किया जा रहा है। इसका निर्माण ग्राहकों को शानदार अनुभव देने के लिये उनके साथ भागीदारी एवं साझेदारी करने के मूल सिद्धांतों पर किया गया है। यह प्रोग्राम प्रोडक्ट, मार्केटिंग और सेल्स फीडबैक के लिये एक परामर्श समिति (ऐडवायजरी काउंसिल) के रूप में काम करेगा। इसका उद्देश्य विभिन्न सोशल चैनलों में ग्राहकों के बिजनेस और अनुभवों को दर्शाते हुये ग्राहकों की जरूरतों को बेहतर तरीके से पूरा करने में मदद करना है। (20-4)

अहमदाबाद में आंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला दिसम्बर में

अहमदाबाद। सौराष्ट्र व्यापार उद्योग महामंडल की ओर से अहमदाबाद में डिसम्बर में आंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला आ आयोजित किया जाएगा। 30 देशो में से 300 से अधिक विदेशी बिजनेसमेन और 1000 से अधिक बिन निवासी गुजराती हिस्सा लेंगे। गुजरात सरकार के उद्योग, कृषि, सायन्स एन्ड टेक्नोलॉजी विभाग तथा इन्डेक्स-बी द्वारा सहयोग ग्रेट ब्रिटेन कंट्री पार्टनर जब जर्मनी सरकार की संस्था जीआईजेड इनोवेशन पार्टनर इथोपिया, धाना, टोगो, सेनेगल, मोजाम्बिक, सुदान, जाम्बिया, कोंगो, साउथ अफ्रिका, केन्या, युगान्डा, तान्जानिया, अफगानिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका सहित अनेक देशों की चैम्बर और एसोसिएशन का सहयोग।

गुजरात के वरिष्ठ संस्थाएं सधर्न गुजरात चैम्बर ऑफ कॉमर्स एन्ड इन्डस्ट्रीज़, क्रेडाई: गुजरात स्टेट प्लास्टिक मैन्युफेक्चरिंग एसोसिएशन, इन्डियन ड्रग्स मैन्युफेक्चरिंग एसोसिएशन, विश्व गुजराती समाज, तेरापंथी प्रोफेशनल फोरम सहित अनेक संगठन इस कार्य में सहयोगी संगठन के तौर पर शामिल है।

संस्था के अनुसार इस समय तक यह ट्रेन्ड रहा है कि हमारे उद्योगपति अपने माल का निर्माण करने के लिए सतत विदेश प्रवास करते है। वर्षभर अलग-अलग देश में जाकर अथाग मार्केटिंग करने का प्रयास होता है। वहां के लोगं के नियमों और शरतों के आधिन होकर कई लंबी उधारी और नुकशान सहन करना पड़ता है। लेकिन कभी सौराष्ट्र व्यापार उद्योग महामंडल की ओर से पिछले 6 वर्ष से सौराष्ट्र की ब्रांड छोटे उद्योग के लिए सोर्सिंग डेस्टीनेसन के तौर पर प्रस्थापित किया गया है। ऐसे में लोगों में सौराष्ट्र कच्छ के उद्योगों के बारे में जानकारी और विश्वसनीयता बढ़ती है। विदेशी उद्योगपति सौराष्ट्र में अपने यहां आकर उद्योगकारों के नियम और शर्तों के आधिन होकर माल ले जाए, नए युग की शुरुआत हो गई है। चीन में उद्योगपति जिस तरह वर्ष के एक भाग में ट्रेड शो का आयोजन कर वर्ष भर के ऑर्डर एक साथ लेकर मात्र उत्पादन करने पर ध्यान देते है। इसी तरह सौराष्ट्र कच्छ में भी ट्रेन्ड शुरू हुआ है और इसे अधिक लोगों तक ले जाने का आयोजन है। (22-1)

मैग्मा फिनकॉर्प लिमिटेड-वित्त-वर्ष 2018 कि पहली तिमाही के मुख्य आकर्षण

अग्रणी एसेट फाइनैंस कंपनी मैग्मा फिनकॉर्प लिमिटेड ने आज वित्त-वर्ष 2018 की पहली तिमाही (क्यू1एफवाय18) के लिए अपने बिना ऑडिट किए हुए नतीजे घोषित कर दिए हैं। इन नतीजों से कंपनी का लगातार सुधरता हुआ प्रदर्शन झलक रहा है। साल-दर-साल आधार पर एनआईएम अब तक की उच्चतम 8.3% की वृद्धि दर के साथ 143 बीपीएस पर जा पहुंचा है। ऐसा फंडों की बेहतर हुई लागत और आय पैदा न करने वाले एनपीएज की संख्या घटने की वजह से संभव हो सका है। वित्त-वर्ष 2017 की चौथी तिमाही (क्यू4एफवाय17) में एनपीए की बिक्री करने के बाद कंपनी ने इस तिमाही में अपने एसेट्स की गुणवत्ता में सुधार करने की यात्रा जारी रखी। इंडस्ट्री के लिए पहली तिमाही कमजोर रहने के बावजूद कंपनी के एनएनपीए में मामूली गिरावट ही दर्ज़ की गई, जबकि इसके उलट पिछले वर्षों का अनुभव ऐसा रहा है कि पहली तिमाही में आम तौर पर एनएनपीए हर बार बढ़ जाता था। कंपनी को पूरा भरोसा है कि पूरे वित्त-वर्ष के दौरान एसेट क्वालिटी में सुधार जारी रहेगा, फलस्वरूप इंटेरेस्ट इनकम रिवर्सल तथा ऋण हानि में कमी आएगी। कंपनी ने पिछले वर्ष इसी अवधि के दौरान जो कर पश्चात लाभ (पीएटी) दर्ज़ किया था, उसके मुकाबले इस वर्ष पीएटी में थोड़ी कमी देखी गई है और यह 45 करोड़ रुपए रहा। इसकी वजह यह थी कि मार्च 2018 तक 90डीपीडी एनपीए प्रावधान मानक को पूरा करने की दिशा में आगे बढ़ने के लिए कंपनी को इस तिमाही में 10 करोड़ रुपए का अतिरिक्त प्रावधान करना पड़ा। कंपनी का संचालन प्रदर्शन बेहतर होने के चलते इस तिमाही के लिए आरओए में सार-दर-साल आधार पर 11 बीपीएस का सुधार हुआ। (19-10)

संपादक-चुनीलाल एस. भट्ट, मुद्रक एवं प्रकाशक-मयुर सी. भट्ट, प्रकाशन स्थल-201, 202, 208 नंदन कोम्पलेक्ष, मीठाखली, अहमदाबाद-6. मालिक-कल्याणी पब्लिकेशन प्रा.लि. द्वारा महादेव ऑफसेट, बी-4, रवि एस्टेट, रूस्तम मिल कम्पाउंड, दूधेश्वर, अहमदाबाद में छपवाकर प्रकाशित किया। फोन-26568477, 26409779. E : alpaviram1@yahoo.com

नेशनल जियोग्राफिक पर इनसाइड आईएनए

सशस्त्र दलों के साथ खास वार्ताओं को चालु रखते हुए इस आजादी के दिन नेशनल जियोग्राफिक दर्शको को एशिया में सबसे बड़े नेवल एकेडेमी के भीतर देखने का मौका मिलेगा।

इनसाइड आईएनए नाम से कार्यक्रम एक घंटे का है, जिसमें भारतीय नौका दल में महिलाओं और पुरूषों को किस तरह तालिम दी जाती है, राष्ट्र की सेवा देनेवाले भावी नेवल हिरो में उनको किस तरह तैयार किया जाता हैइस पर रौमांच और ब्रेक फ्री जानकारी दी जाती है, जिससे वे समुद्र की चुनौतियों का सामना कर सके। इस मामले में गहराई से देखने बहादूरी तथा देशभक्ति को प्रेरित करता हैं । कृतियां , भावना एवं त्याग का यह सर्वोत्तम संमिश्रण आजादी दिन मनाने और अपने राष्ट्र के विरो को सलाम करने की अनुकूल रीत हैं ।

नेशनल जियोग्राफी एक्सक्लुजीव पर बोलते हुए फोक्स नेटवर्क्स ग्रुप के बिजनैस हेड स्वाति मोहन ने बताया कि इनसाइड आईएनए ऐसी वार्ता, विचार और लोगों को प्रदर्शित करता है जो अपने को जोश और उन्माद के साथ आगे ले जाता है। ये केडेट्स और नौका दल के अधिकारी की भावी पीढ़ी मन:पुर्वक अपनी ड्यूटि कैसे निभाते हैं यह देखना दिल को छू जानेवाला होगा। यह कार्यक्रम 15 अगस्त , मंगलवार रात 9.00 बजे नेशनल जियोग्राफीक पर दर्शाया जायेगा।-

अहमदाबाद के ब्लाइंड पीपुल्स एसोसिएशन में 'विजन इन द डार्क' टूर

अहमदाबाद, भारत के टीवी जगत में पहली बार ज़ी की ओर से टेक्नोलॉजी की मदद से नेत्र एवं कर्ण बधिर लोगों के लिए एक खास अभियान छेड़ा गया है। रुमय्वत ासस नाम के इस अभियान के माध्यम से ज़ी उन लोगों तक अपनी पहुंच बनाना चाहता है, जिन्हें देख और सुन नहीं सकते। अब ऐसे लोग भी उन लाखों भारतीयों की तरह ज़ी पर दिखाई जाने सामग्री का आनंद ले सकते हैं। यह अभियान आमिर खान की फिल्म दंगल के प्रीमियर के जरिये चलाया जा रहा है।

भारत की सबसे बड़ी और पहली मीडिया एवं इंटरटेनमेंट कंपनी ज़ी एंटरटेनमेंट एंटरप्राइजेज लिमिटेड इस साल अपनी 25वीं वर्षगांठ मना रही है। ज़ी ने हमेशा ही भारत के दर्शकों को विश्वस्तरीय मनोरंजन प्रदान करने का अपना वादा निभाया है। इस क्षेत्र का नेतृत्व करते हुए अपने दर्शकों के साथ-साथ अपने सभी सहयोगियों के साथ एक गहरा रिश्ता भी कायम किया है। इस समूह ने मनोरंजन उद्योग में स्वस्थ सेवाओं का चलन भी स्थापित किया है। ज़ी 172 देशों में एक अरब से ज्यादा दर्शकों का मनोरंजन कर रहा है, जिसके पीछे इस समूह की विचारधारा है - वसुधैव कुटुंबकम यानी सारा विश्व मेरा परिवार है। अब इस स्वतंत्रता दिवस पर यानी 15 अगस्त 2017 को दोपहर 12 बजे ज़ी अपनी ब्रांड विचारधारा को एक कदम आगे ले जा रहा है। (19-8)

सूचना
कृपया आपके विज्ञापन व समाचार हमारे निम्न लिखित ई-मेल पर ही भेंजे :
alpaviram@gmail.com